इल्म उल हदीस
http://salfibooks.blogspot.com

कुछ ख़ास अल्फ़ाज़ व उनके मअना

(बच्चों के लिए इस्लामी डिक्शनरी)

ए. ए. फारूकी, शक्ति नगर, लखनऊ

मोअज्जिज़ कारिईन निदा-ए-हक़ के इल्म में इज़ाफ़ह की गरज़ से पेश ख़िदमत है :

अल्लाह-बहुत से लोग ऐसा समझते हैं कि फ़ारसी के खुदा, अंग्रेजी के गॉड, हिन्दी के भगवान और अरबी के अल्लाह में कोई फ़र्क नहीं है, सब एक ही हैं। लेकिन ऐसा कतई नहीं है। अलबत्ता मफहूम (भावार्थ) सब का एक हो सकता है। बेशक खुदा, गॉड और भगवान को एक मान सकते हैं लेकिन अल्लाह तो सबसे अलग हस्ती का नाम है। अल्लाह का तर्जुमा (अनुवाद) किसी दूसरी जुबान में मुमकिन नहीं है। दरअसल अल्लाह तो उस अज़ीम (महान) हस्ती का नाम है जो माबूदे-वाहिद (अकेला पूज्य) के अलावा किसी और के लिये नहीं बोला जा सकता। जबकि भगवान, गॉड और खुदा दूसरों के लिये भी बोला जा सकता है।

भगवान के अवतार हो सकते हैं, गॉड और खुदा के बेटे हो सकते हैं जबकि अल्लाह का कोई शरीक नहीं है। अल्लाह एक है। वह किसी का मुहताज नहीं जब कि हर कोई उसका हर तरह से मुहताज है। वह न तो किसी का बाप है और न किसी का बेटा। इस लिये हम कह सकते हैं कि उसके जोड़ का कोई नहीं है। लिहाजा वो मुसलमान अपना जायज़ा खुद लें जो अल्लाह हाफिज के बजाय खुदा हाफ़िज कहते नहीं थकते?

मुहम्मद और अहमद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मोटे तौर पर बस यूँ समझ लीजिये कि मुहम्मद, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसललम का दुनियावी नामे मुबारक है जब कि अहमद ग़ैबी। इसे हम इस तरह भी जान सकते हैं कि

ने रखा था और अहमद नाम अल्लाह रब्बुल आलमीन का अता किया हुआ है।

इस्लाम: अल्लाह के हुक्म के मुताबिक और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर ज़िन्दगी गुजारना।

ईमान : यह गवाही देना कि नहीं है कोई इबादत के लायक सिवा अल्लाह के और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

मुसलमान : उसे कहते हैं जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखने के साथ अल्लाह के रब होने इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने पर राज़ी हो गया।

ईमान वाला : ऐसे मुसलमान को कहते हैं जिसे नेक यानी भलाई के काम करने पर खुशी हासिल हो और बुरे काम से उसे तकलीफ और अफसोस हो।

नबी, पैग़म्बर और रसूल : इन सब के माने हैं अल्लाह के अहकाम को लोगों तक पहुंचाने वाला। रसूल को अल्लाह ने किताब अता की। चुनांचे हर रसूल, नबी या पैग़म्बर तो हो सकता है लेकिन हर नबी या पैग़म्बर, रसूल नहीं हो सकता।

कुर्आन : कुर्आन का मतलब है पढ़ना। इससे मकसूद वह मुक़द्दस किताब है जिसे अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाया ताकि इसे ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा जाये, समझा जाये और उस पर अमल किया जाये।

हदीस : ऐसा क़ौल (वचन), फ़ेल (कर्म) और तक़रीर (ख़ामोश इजाज़त) जिसकी निस्बत रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ की गयी हो।

तक़रीर : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने कोई काम किया गया या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई रिवाज देखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसललम ने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली। इस तरह तक़रीर से मुराद किसी काम को करने के लिये रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त है।

सहाबी : उस खुशकिस्मत शख्स को कहते हैं जिसने ईमान की हालत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा हो या मुलाक़ात की हो और ईमान ही की हालत में वफ़ात पाई हो। अगर वो शख़्स औरत है तो उसे सहाबिया कहते हैं।

ताबई : उस खुश किस्मत शख़्स को कहते हैं जिसने ईमान की हालत में किसी सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाकात की हो और ईमान ही की हालत में वफ़ात पाई हो।

तबाताबई : वे मुअज्ज़िज़ हज़रात, जिन्होंने ईमान की हालत में किसी ताबई से मुलाक़ात की हो और ईमान ही की हालत में वफ़ात पाई हो।

शरीयत : कुर्आन व सुन्नत की सूरत में अल्लाह तआला के मुकर्रर किये हुए अहकामात।

हदीस कुदसी : जिस हदीस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाज की जानिब से बयान करें।

मरफूअ : वह क़ौल, अमल या तक़रीर जिसका ताल्लुक़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हो, भले ही उसकी सनद मुत्तसिल (क्रमबद्ध) हो या न हो।

सहीह : जिस हदीस की सनद मुत्तसिल (क्रमबद्ध) हो और उसके तमाम रावी (बयान करने वाले) सिक़ा (विश्वसनीय) दयानतदार और कुव्वते-हाफिज़ा (स्मरण शक्ति के) मालिक हो।

हसन : जिस हदीस के रावी हाफिज़े के ऐतबार से सहीह हदीस के रावियों से कम दर्जे के हों।

मुतवातिर : वो हदीस जिसे बयान करने वाले रावियों की तादाद इस कदर ज़्यादा हो कि उन सबका झूठ पर जमा होना अकलन मुहाल हो।

सिलसिले में ताबई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच सहाबी का ज़िक्र न हो।

मौज़ूअ : ज़ईफ हदीस की वो किस्म जिसमें किसी मनगढंत खबर को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ मन्सूब किया गया हो।

मुस्नद : हदीस की वोह किताब जिसमें हर सहाबी की अहादीस को अलग-अलग जमा किया गया हो। मसलन मुसनद अहमद, वगैरह

सुनन : हदीस की वो किताब जिसमें सिर्फ अहकाम (हुक्म) की अहादीस जमा की गयी हो। मसलन, सुनन इब्ने माजा, वगैरह

सिहाहसित्ता : मारूफ हदीस की छ: किताबें यानी बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिजी, अबू दाऊद, इब्ने माजा और नसई।

सहीहीन : सहीह हदीस की दो किताबें, यानी सही बुखारी और सहीह मुस्लिम।

मक़बूल : वो हदीस जिसे हदीस के इमामों ने हुज्जत (प्रमाण) के लायक समझा हो।

मुहकम : वो हदीस जिसे हदीस के इमामों ने दलील के लायक न समझा हो।

रावी : जो अपनी सनद के साथ हदीस बयान करता हो, चाहे मर्द हो या औरत।

फिक्ह : दर हक़ीक़त किसी मसले के हल के लिये कुर्आन और हदीस की रोशनी में बनाये गये कानून को फिक्ह याकानून शरीयत कहते हैं। मगर अहनाफ के नज़दीक फिक्ह का मतलब आम तौर से इमाम अबू हनीफा रह. का क़ौल है।

इज्तेहाद : शरई अहकाम के इल्म की तलाश में भरपूर जहनी कोशिश को इज्तिहाद कहते है।

मौजूद हो।

इमाम : किसी भी फन का मारूफ आलिम जैसे फन्ने हदीस में इमाम बुखारी और फन्ने फिक़्ह में इमाम अबू हनीफा।

मुस्तहब : ऐसा काम जिसे करने में सवाब हो जब कि उसे छोड़ने में गुनाह न हो मसलन, मिस्वाक, वगैरह। फिक़्ह में नफिल और सुन्नत इसी को कहते हैं।

मकरूह : जिस काम को न करना उसे करने से बेहतर हो और उससे बचने पर सवाब हो, जब कि उसे करने पर गुनाह न हो।

फर्ज : जिस काम को लाज़मी तौर पर करने का हुक्म दिया हो और जिसे करने पर सवाब और न करने पर गुनाह हो। मसलन नमाज, रोज़ा वगैरह

वाजिब : वाजिब का मतलब भी वही है जो फर्ज का है। जम्हूर फिक़्हा के नज़दीक इन दोनों में कोई फर्क नहीं, अलबत्ता अहनाफ इसमें कुछ फर्क करते हैं।

जायज़ : ऐसा शरई हुक्म जिसको करने और छोड़ने में इख़्तियार हो। मुबाह और हलाल भी इसी को कहते हैं।

हराम : जिस काम से लाज़मी तौर पर बचने का हुक्म दिया हो और उसके करने में गुनाह हो, जबकि उससे दूर रहने पर सवाब हो।

तक़्वा : इससे मुराद अल्लाह का डर है। इसका मतलब परहेज़गारी भी है।

मस्लक : यह लफ़्ज मुख़्तलिफ मक़ातिब फिक्र की नुमाइन्दगी करता है। मसलन हनफी मसलक, वगैरह।

मज़हब : ग्रामर के लिहाज़ से इसका भी वही मतलब है जो मसलक का है लेकिन अवाम में यह लफ़्ज दीन (जैसे मज़हबे-ईसाइयत, वगैरह) और फिर्कह (जैसे हनफी मज़हब वगैरह) के लिये भी इस्तेमाल होता है।

अलैहिस्सलाम (अलै.) : यानी आप पर अल्लाह का सलाम हो।

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (रज़ि.) : अल्लाह राजी हो।

रहमतुल्लाह अलैह अजमईन (रह.) अल्लाह रहमत नाज़िल फरमाये।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (सल्ल.) : ला तादाद दरूदो सलाम हो।